बुद्धि की परिभाषा एवं सिद्धातं

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP)

in Hindi Medium

Topic : Critical perspective of the construct of Intelligence

बुद्धि की परिभाषा एवं सिद्धातं

शिक्षा मनोविज्ञान में बुद्धि के ऊपर सर्वाधिक कार्य किया गया है। 17वीं शताब्दी से ही दर्शन के साथ मनोविज्ञान के अध्ययन पर बुद्धि के स्वरूप संरचना प्रकार व सैद्धांतिक आधार की चर्चा प्रारंभ हो गई थी।

जहाँ तक बुद्धि शब्द की परिभाषा का प्रशन है तो मनोविज्ञानिकों ने इसे तीन श्रेणियों में विभक्त किया है।

1. समायोजन
2. सीखने की क्षमता
3. अमूर्त चिंतन

अंग्रेजी में बुद्धि को construct के नाम से जाना जाता है। व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर हर व्यक्ति में बुद्धि का स्तर अनुवांषिकी एवं पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव के कारण अलग अलग होता है।

ई.एल. थार्नडाइक ने बुद्धि के तीन प्रकार बताए हैं

1) सामाजिक बुद्धि 2) अमूर्त बुद्धि 3) मूर्त बुद्धि

www.tetsuccesskey.com

1) सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence)

सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य वैसी मानसिक क्षमता, जिसके सहारे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को ठीक ढंग से समझता व व्यवहार कुषलता दिखा पाता है। ऐसे लोगों का सामाजिक संबंध बहुत ही अच्छा होता है व समाज में उनकी बहुत इज्जत होती है। जैसे अच्छे नेता, शिक्षक इत्यादि।

www.tetsuccesskey.com

2) अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence) -

अमूर्त बुद्धि से तात्पर्य वैसी मानसिक क्षमता जिसके सहारे व्यक्ति शाब्दिक तथा गणितीय संकेतों व चिन्हों को आसानी से समझ पाता है व उनकी उचित व्याख्या कर पाता है ऐसे व्यक्ति जिनमें अभूर्त बुद्धि अधिक होती हैं सफल कलाकार, पेंटर व गणितज्ञ होते हैं।

www.tetsuccesskey.com

3) मूर्त बुद्धि Concrete Intelligence)

मूर्त बुद्धि से तात्पर्य ऐसी मानसिक क्षमता जिसके सहारे व्यक्ति ठोस वस्तुओं का महत्व समझता हैं तथा उसका उपयोग ठीक ढंग से विभिन्न परिस्थितियों में करता है ऐसे बुद्धि वाले व्यक्ति सफल व्यापारी बन सकते हैं।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि को इस प्रकार परिभाषित किया है -

मन के अनुसार "नवीन परिस्थितियों को झेलने की मस्तिष्क की नमनीयता।"

बंकिन्घम के अनुसार "सीखने की योग्यता ही बुद्धि है।"

बर्ट के अनुसार "बुद्धि अच्छी तरह निर्णय करने, समझने एवं तर्क करने की योग्यता है।

www.tetsuccesskey.com

वुडवर्थ के अनुसार "बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि बुद्धि में अतीत के अनुभवों का प्रयोग नवीन परिस्थितियों में समायोजन, परिस्थिति को समझना तथा क्रिया को व्यापक रूप से समझना ही बुद्धि है। बुद्धि के विषय में एक मत यह विकसित हो रहा है कि बुद्धि नामक कोई भी तथ्य नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी क्षमता होती है। एक व्यक्ति एक क्षेत्र में अपनी योग्यता तथा क्षमता का लाभ उठाता है तो दूसरा व्यक्ति दूसरे क्षेत्र में लाभ उठाता है।

www.tetsuccesskey.com

अवश्ये पढ़े: बुद्धिलब्धि एवं उसका मापन बुद्धि परीक्षण के प्रकार

बहुआयामी बुद्धि (Multi-dimensional Intelligence)

बुद्धि के सिद्धातं:-

बुद्धि के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किये गये है जो उसके स्वरूप पर पर्याप्त प्रकाश डालते है। इसके प्रमुख सिद्धांत है-

www.tetsuccesskey.com

1. एक खण्ड का सिद्धांत।
2. दो खण्ड का सिद्धांत।
3. तीन खण्ड का सिद्धांत
4. बहु खण्ड का सिद्धांत।

www.tetsuccesskey.com

5. मात्रा सिद्धांत।
6. वर्ग घटक सिद्धांत।
7. क्रमिक महत्व का सिद्धांत

1. **एक खण्ड का सिद्धांत**:- इस सिद्धातं के प्रतिपादक बिनेट और टर्मन है। उन्होंने बुद्धि को एक अखण्ड और अविभाज्य इकाई माना है। उनका मत है कि व्यक्ति की विभिन्न मानसिक योग्यताएं एक इकाई के रूप में कार्य करती है।

2. **दो खण्ड का सिद्धांत**:- इस सिद्धातं का प्रतिपादक स्पीयरमैन है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में दो प्रकार की बुद्धि होती है- सामान्य तथा विशिष्ट।

3. **तीन खण्ड का सिद्धांत**:- यह सिद्धातं भी स्पीयरमैन के नाम से संबंधित है। उसने इसका नाम सामूहिक खण्ड दिया। उसने बुद्धि का एक खण्ड और बनाया।

4. **बहुखण्ड का सिद्धांत**:- स्पीयरमैन के बुद्धि के सिद्धातं पर आगे कार्य करके गिलफर्ड ने "बहुखण्ड का सिद्धांत" प्रतिपादित किया।

5. **मात्रा सिद्धांत**:- इस सिद्धातं का प्रतिपादक थार्नडाइक है। इनका मत है कि मस्तिष्क का गुण स्नायु तन्तुओं की मात्रा पर निर्भर रहता है।

6. **वर्ग घटक सिद्धांत**:- जी. थामसन ने बुद्धि को अनेक विशिष्ट योग्यताओं तथा विशेषताओं का समूह माना है, एक ही वर्ग में अनेक प्रकार की विशेषताएं होती है।

7. **क्रमिक महत्व का सिद्धांत**:- बर्ट तथा टर्मन ने मानसिक योग्यताओं को क्रमानुसार महत्व दिया है। यह क्रम इस प्रकार है-

1. सामान्य।

2. स्मरण, चिन्तन, तर्क, कल्पना।

3. विशेष मानसिक योग्यता।

बहुकारक सिद्धांत (Multiple Intelligence):

हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner) ने अपने द्वारा दिये बुद्धि सिद्धान्त के माध्यम से मल्टीपल बुद्धि के बारे में बताया। हावर्ड के अनुसार हम सभी में सात मापन बौद्धिक क्षमताएँ होती हैं जो कि निम्न है-

(i) तार्किक - गणीतीय (Logical-Mathematical)
(ii) शाब्दिक - भाषायी (Verbal-Linguistic)
(iii) स्थानिक - यांत्रिकी (Spatial-Mechanical)
(iv) संगीतमय (Musical)
(v) शारीरिक -गतिबोधन (Bodily-Kinesthetic)
(vi) अन्तर व्यक्तिक सामाजिक (Interpersonal social)
(VII) अन्तर व्यक्तिक स्व:ज्ञान (Interpersonal self knowledge)

हावर्ड के अनुसार, सामान्यत: विद्यालय दो प्रकार की मानसिक क्षमताओ- तार्किक-गणितीय तथा शाब्दिक को ही पढ़ाते, परीक्षित तथा पुरस्कृत करते हैं। हावर्ड ने कहा कि जिन विद्यार्थियों में शाब्दिक तथा तार्किक गणितीय क्षमताएँ पाई जाती हैं वे विद्यालय में अच्छा कार्य करते हैं। इन दो क्षमताओं के न होने पर बालक असफल हो जाता है चाहे वह बुद्धि के दूसरे रूप में कितना ही बुद्धिमान क्यों न हो।

थार्नडाइक (Thorndike) तथा गिलफर्ड (Guilford) 1967 के बहुकारकीय सिद्धान्त द्वारा भी मल्टिपल बुद्धि का पता चलता है। थार्नडाइक के अनुसार बुद्धि कई मानसिक क्रियाओं व क्षमताओं का योग है। गिलफर्ड (Guilford 1967), ने 120 तत्व बताये तथा इन्हें तीन आयामों में विभाजित किया। ये तीन आयाम हैं - (i) संक्रिया (Operation), (ii) विषयवस्तु (Content), (iii)उत्पादन (Product)।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि मल्टीपल, बुद्धि से तात्पर्य है मानसिक क्षमताओं का सक्रिय समष्टि।

नोट: आपको हमारी पोस्ट कैसी लगी, कृपया कमेंट करके ज़रूर बताए ।

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.